

الْعَقَاة

अल् अकाइद

अल् अक़ाइद

भाग २

मूल लेखक
हजरत अल्लामा जहेरुल्लूम
अशरकुल्लामा
सैयद अशरक़ 'शम्सी' साहब (रे.अ.)

अनुवाद
डॉ. सैयद अशरक़ 'यदुल्लाही'

Published by :
THE YADULLAHI TRUST
16-3-806/2, Chanchalguda, Hyderabad-24 A.P.

અલ્ અકાઇદ

કમસિન બચ્ચોં કી તાલીમ કે લિયે

ભાગ ૨

એડિશન : પહલા (મઘ, ૧૯૯૭)

મૂળ લેખક : હઝરત અલ્લામા બહેરુલ્લૂમ અશરફુલ્લમા સૈયદ અશરફ 'શમ્સી' સાહબ 'યદુલ્લાહી' (રૈ.અ.)

અનુવાદ : ડૉ. સૈયદ અશરફ 'યદુલ્લાહી'

ઝેરે નિગરાની : પીરોમુર્શીદ મૌલ્વી હ. સૈયદ રૌશનમિયાં સાહબ, યદુલ્લાહી સજ્જાદા દાયરએ મહેદવિયા પાંજણીગરવાડ, ડભોઇ.

પ્રકાશક

ધી યદુલ્લાહી ટ્રસ્ટ

૧૬-૩-૮૦૬/૨, ચંચલગુડા, હૈદરાબાદ - ૫૦૦ ૦૨૪.

પેશ લફઝ

અઝ

હઝરત અલ્લામા બહેરુલ્લૂમ અશરફુલ્લમા સૈયદ અશરફ 'શમ્સી' સાહબ (રે.અ.)

હામિદન વ મુસલ્લિયન. એક ઝમાને સે મેરે ભતીજે મૌલવી સૈયદ મુર્તુઝાકા જો મેરે શગિદ ભી હૈ યે તકાઝા થા કે બચ્ચોં કી તાલીમ કે લિયે અકાઇદ મેં એક રિસાલા બતૌરે સવાલો જવાબ કે સંલીસ ઇબારત મેં જો બચ્ચોં કી સમઝ મેં આ જાયે તાલીફ ક્રિયા જાયે. ખુસૂસન્ જબ વો 'અંજુમને-મહદવિયા' ચનપટન કે સરપરસ્ત બનાયે ગયે ઓર અલાવા કૌમી કામોં કે એક મદ્રસા ઓર બૈતુલ્લુબા ભી ઇનકી નિગરાની મેં આ ગયા, તો ઉન્હોંને ઇસ રિસાલે કી તાલીફ કા તકાઝા બહુત હી એહમિયત કે સાથ ક્રિયા. બંદા ચૂંકે મદ્રસાએ દારુલ્લૂમ સરકારેઆલા મેં મુલાઝિમ ઓર કાલેજ કી જમાઅતોં કી તદરીસ પર મામૂર હૈ ઓર નીઝ ખાનગી તૌર પર ભી કૌમી તુલ્બાકી તદરીસો તાલીમ મેં મસરૂફ રહતા હૈ, કમફુરસતી કી વજહ સે ઉઝરો બહાના કરતા રહા. બિલ્આખિર ઇસ ફરમાઇશ કે પૂરે ક્રિયે બગૈર ચારા નહીં દેખા, માહે મુહર્રમુલ્હરામ, ૧૩૩૨ હિ. (ઇ.સ.૧૯૧૩)કી તાતીલમેં ઇસ રિસાલે કો શુરૂ ક્રિયા ઓર બહુત જલ્દ ઇસકી તાલીફ સે ફરાગત હાસિલ કી. ઇસ મુખ્તસર રિસાલે મેં વહી ઝુરૂરી મસાઇલ બયાન ક્રિયે ગયે હૈં જિન્કો બચ્ચે સમઝ સકે. અલ્લાહતઆલા સે દુઆ હૈ કે યે રિસાલા કારઆમદ સાબિત હો ઓર બચ્ચોં કો નફા પહૂંચાયે

ફકત

સૈયદ અશરફ ગફરુલ્લહૂ

૨૧, સફર ૧૩૩૨ હિજરી

सवाल वलीकी क्या तारीफ़ है ?

- जिसको अल्लाह तआला से नज़दीकी है वही वली है.

सवाल अल्लाह तआला से नज़दीकी किस काम के करने से होती है?

- मुहम्मद रसूलुल्लाह (स. अ.) की पैरवीसे होती है. जैसा जैसा पैरवी बढ़ती जायेगी वैसा वैसा अल्लाह तआला से नज़दीकी ज़यादा होती जायेगी.

सवाल वली के कितने किस्म (प्रकार) हैं ?

- वलीअे कामिल और वलीअे नाकिस.

वलीअे कामिल वो है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी में कामिल (पूर्णा) हो और वलीअे नाकिस (अधूरा) वो है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी में नाकिस हो.

सवाल किन किन चीज़ों में रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी की ज़रूरत है?

- आंज़रत (स.अ.) के कौलो इ़ैलो हाल में पैरवी चाहिये.

- कौल में पैरवी करने का मतलब ये है के सय कहे और रसूलुल्लाह (स.अ.) ने ज़न कामों के करने का हुकम इर्माया है उन्हीं कामों के करने का हुकम करे और ज़न चीज़ों के न करने का हुकम इर्माया है उन्को मना करे.

- इ़ैल में पैरवी करने के ये माना हैं के जो इब्नादतें रसूलुल्लाह (स.अ.) ने की हैं वही इब्नादत करे और ज़सतरह रसूलुल्लाह (स.अ.) मुआमला (व्यवहार) इर्माते थे उसी तरह मुआमला करे.

- हाल में पैरवी करने का ये मतलब है के मुहम्माद रसूलुल्लाह (स.अ.) की जो हालतथी वही अपने में पैदा करे.

सवाल आंड़रत (स.अ.) की क्या डलत थी ?

- आपकी तीन डलतें हैं. १) डशरी २) डलकी ३) डककी
 - डशरी डलत के ये डनन हैं के आपको डी डशरी डरतें थीं, डखन डनन, डीनन, सोनन वगैरन, डगर डनतये थी के आप अननी डवलडशसे कम डनते-डीते थे और डवलडश से कम आरनड डरडते थे और दुसरी डरतें डी डसी तरड की थीं.
 - डलकी डलत से ये डतडल है के रसूलुदुलड (स.अ.) डर वडी डती थी, डनने आप डररशतों से डनतडीत करते थे और डररशते आपको डडडन डते थे और आपके डनस आतेडते थे. आपकन डररड और डकी डें डररशतों के डररड के डरनडर डडके डडकर थन. डसीवनस्ते आपने आसुडननों की सैर की और डररडल (अ.स.) डस डगन नडीं ड सकते थे उस डगन डररत डडुंये थे.
 - तीसरी डलत आपकी डककी है. डसकन ये डतडल है के रसूलुदुलड (स.अ.) ने डुद डरडनन है के 'डुडे अदुलडतननन के सनथ ऐसी नडडीकी डो डती है के उस डगन कोड डुकरुड डररशतन और डनन डैगडुडर नडीं डडुंय सकतन' और सडी डडीसों डें डरर डररन डनन है के रसूलुदुलड (स.अ.) ने डैरनड की रनत डें डुदन को डेडन है और डडरन डडडल डी डडी है.

गरड डन तीनों डलतों डें डररने डरनडर डैरवी की वु कनडल वली है और डररने डरनडर डैरवी नडीं की वड ननकस रेड डनन. ऐसन शडस वलीने कनडल नडीं है.

सवाल उजराते अवलियाअे कामिलीन में सभसे बणा और साडभे मर्तबा वली डौन है ?

- वो वली सभ अवलिया अल्लाहमें बुजुर्ग है जो जुद कामिल हो और दूसरों को अपनी तालीम से कामिल कर दे.

सवाल क्या हर इन्सान अल्लाहतआला की इबादत करने और जुदाकी राहमें मेहनतें उठाने और ज्यादा रियाजत से विलायत हासिल कर सकता है ?

- इबादत और जुदाकी राह में मेहनत करने से 'आमविलायत' हासिल होने की उम्मीद की जा सकती है, मगर ખાસ विलायत हासिल नहीं होती.

सवाल 'विलायत' के कितने किस्म हैं ?

- विलायते आम्मा और विलायते ખાસ્सा

विलायते आम्मा तो समज में आगए होगी मगर 'विलायते ખાस्सा' वो है, जो इबादतो मेहनत से हासिल नहीं होती बल्के ये विलायत उसी शख्स को हासिल होती है जसको अल्लाह तआला अपने इजलसे इनायत करता है. इस विलायत की हालत वही है जैसाके नुबूवत की हालत है. पस जिस तरह के नुबूवत, इबादतो मेहनत से हासिल नहीं हो सकती, उसी तरह ये विलायते ખાस्सा भी इबादत और मेहनत से हासिल नहीं हो सकती. ये बर्गुजिदा शख्स आंइजरत (स.अ.) का ताबअेताम (पूर्ण इत्तेबा-अनुसरण करने वाला) होता है और आंइजरत (स.अ.) के कमालात का वारिस होता है.

सवाल 'ताबअेताम' किसको केहते हैं ?

- ताबअेताम वो शख्स है.....

जिसका अमल वही हो जो रसूलुल्लाह (स.अ.) का अमल था और जिसका डाल वही हो जो रसूलुल्लाह (स.अ.) का डाल था और जिसकी दावत वही हो जो रसूलुल्लाह (स.अ.) की दावत थी.

सवाल जो शप्स इस तरह रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी करेगा तो उससे ખता काहेको होगी ?

●●● वो ખता से 'मासूम' है, अल्लाह तआला की तरफ लोगोंको बुलाता है, जिसतरह रसूलुल्लाह (स.अ.) अल्लाह की तरफ बुलाते थे, पस उसके कौलोईलमें कभी ખता नहोगी क्योंकि जो शप्स ये दावा करे के मैं मिसल पैगम्बरों के अल्लाह की तरफ बुलाता हूं और इस दावे पर भोजिजे भी बताता है तो उसकी तस्दीक और उस पर इमान लाना इर्ज होजाता है, फिर अगर उससे ખता भी होती है तो उस पर इमान लाना इर्ज न होगा.

सवाल क्या कोछ शप्स रसूलुल्लाह (स.अ.) के बाद भी साडबे दावत पैदा होगा ?

●●● बेशक पैदा होगा.

सवाल क्या ऐसे शप्स के पैदा होने की रसूलुल्लाह (स.अ..) ने ખबर दी है ?

●●● बेशक आंइजरत (स.अ.) ने ऐसे शप्स के पैदा होने की ખबर दी है ओर इर्माया है के मेरे बाद मेरी उम्मत की हिदायत के लिये अेक शप्स अल्लाह का ખलीफा पैदा होगा और उसका लकब मडदी है, तुम लोगों पर इर्ज है के उसके हाथ पर बैअत करो. ये हदीस किताबे सन्नू 'छब्ने माज्ज' में ह. सोबान (रजि.) से मरवी है के रसूलुल्लाह (स.अ.) ने

इर्माया है के 'मेरी उम्मत क्योकर उलाक होगी के मेरी उम्मत के पेहले हिस्से में मैं मौजूद हूं और उम्मत के पिछले हिस्से में इसा (अ.स.) आयेंगे और मेरी उम्मत के दरम्यानी हिस्सेमें महुदी (अ.स.) होंगे' और नीज अबूदाउद में मरवी है के महुदी (अ.स.) मेरे जुल्क के मानिंद होंगे और नीज ह. अली (रजि.) से मरवी है के 'महुदी (अ.स.) पर दीन जत्म होजायेगा' याने महुदी अेहकामे दीन को जत्म करेगा. गरज इस तरहकी बहुत सी रिवायतें मौजूद हैं, जिन्से साबित होता है के रसूलुल्लाह (सं.अ.) के बाद अेक जलीफ़ अे जुदा पैदा होगा और अल्लाहकी तरफ़ लोगों को बुलायेगा और दीन उसी पर पूरा होगा.

सवाल क्या रसूलुल्लाह (सं.अ.) ने ये जबर ली दी है के ये शप्स मासूम होगा?

- आंजलरत (सं.अ.) ने ये जबर दी है के ये शप्स जिस्का लकज 'महुदी' है मेरी औलाद से होगा, मेरे कदम पर चलेगा कभी जता नहीं करेगा. पस महुदी (अ.स.) का मासूम होना साबित है और नीज इर्माया है के महुदी (अ.स.) जलीफ़तुल्लाह हैं, उसका मासूम होना जरूरी है क्योके अल्लाह तआला की जिलाइत और मासीयत (गुनाह) अेक शप्स में जमा नहीं हो सकती, बल्के उसका हरतरह से पाक होना जरूरी है.

सवाल 'जलीफ़तुल्लाह'में क्या सिफ़तें होती हैं ?

- उसकी सबसे जणी सिफ़त ये है के जता से मासूम हो और महुदी (अ.स.) में ये सिफ़त मौजूद है.

सवाल जलीफ़तुल्लाह की क्या तारीफ़ है?

- उसकी तारीफ़ पेहले जयान हो यूकी है के उसमें अंबिया के

सिफ़ात होने चाहिये. मगर इस जग़ा ये ज़ान लेना चाहिये के अल्लाह तआला के पलीफ़ों को अल्लाह तआला के 'इस्म'का इल्म होता है, यूनांये अल्लाह तआलाने आदम (अ.स.) के डिस्सेमें, बयान इर्माया है के आपको सब 'अस्मा' की तालीम दी गइ थी. अस्माअे मज्लूक हो या अस्माअे ખालिक. पस इस तरह की तालीम पैगम्बरों और अल्लाह के पलीफ़ों को हुवा करती है.

सवाल जो शप्स मासूम है, क्या उस शप्स से इज़ा हासिल कर सकता है, जो मासूम नहीं है?

●●● नहीं हासिल कर सकता.

सवाल इसकी क्या वजह है?

●●● अगर मासूम शप्स उस शप्स से जो मासूम नहीं है, तालीम पायेगा तो मासूम के सब अेहकाम में भी ખता का शुबा पैदा हो ज़येगा, इस सूरत में उसके केहने की तस्दीक इर्ज़ न होगी.

सवाल मउदी (अ.स.) जब 'ખातिमेदीन' हैं, तो किस चीज़को पूरी इर्मायेंगे?

●●● हमारे पहेले बयानो से तुमको मालूम हुवा होगा के कुरआने मज्जद में कइ चीज़ों का बयान किया गया है. मगर अेहकामे कुरआन चार डिस्म (प्रकार) के हैं.

१) अक़ायद २) इबादात ३) मुआमलात और ४) अेहसान.

अक़ायद वो चीज़ें हैं, ज़नका पहेले बयान हो यूकाहै, मस्लनू अल्लाह तआला अेक है और उसका कोइ शरीको मिस्ल नहीं है, उसको 'इल्म' है और वो 'क़ादिर' है, 'जिंदा' है, 'सुन्ता' है 'देખता' है, 'क़लाम' करता है, सब चीज़ों का ख़ालिक है,

(ਓਨ ਥੀਯੋਂ ਕਾ ਤਫ਼ਸੀਲੀ ਭਯਾਨ ਪਛੇਲੇ ਹਿਸ਼ੇਮੇਂ ਕ੍ਰਿਯਾ ਜਾ ਚੁਕਾ ਹੈ) ਓਭਾਏਤ ਸੇ ਮੁਰਾਏ ਨਮਾਜ਼, ਰੋਜ਼ਾ, ਓਜ਼, ਜ਼ਕਾਤ, ਜ਼ਿਓਏ ਵਗੈਰਾ ਹੈ. ਮੁਆਮਲਾਤ ਸੇ ਭੇਯਨਾ, ਖਰੀਏਨਾ ਓਰ ਓਕਰਾਰ ਕਰਨਾ, ਗਵਾਈ ਏਨਾ ਵਕਾਲਤ, ਓਵਾਲਤ ਵਗੈਰਾ ਮੁਰਾਏ ਹੈ.

ਓਓਸਾਨ ਸੇ ਮੁਰਾਏ ਯੇ ਹੈ ਕੇ ਅਲਲਾਹਤਆਲਾ ਕੀ ਓਸੀ ਓਭਾਏਤ ਕਰੋ ਕੇ ਅਲਲਾਹਤਆਲਾ ਕੋ ਤੁਮ ਏਖ ਰਛੇ ਓ ਓਰ ਅਗਰ ਯੇ ਨ ਓ ਸਕੇਤੋ ਯੇ ਖਯਾਲ ਕਰੋ ਕੇ ਅਲਲਾਹਤਆਲਾ ਤੁਮਕੋ ਏਖ ਰਛਾ ਹੈ. ਆਂ ਓਜ਼ਰਤ (ਸ.ਅ.) ਨੇ ਅਕਾਯਏ, ਓਭਾਏਤ, ਮੁਆਮੇਲਾਤ ਕੇ ਓਓਕਾਮ ਕੀ ਲੋਗੋਂ ਕੋ ਤਾਲੀਮ ਏੀ ਓਰ ਓਸਕੋ ਖੂਭ ਸਮਜਾਯਾ, ਮਗਰ 'ਓਓਕਾਮੇ ਓਓਸਾਨ' ਕੀ ਏਵਤ ਨਹੀਂ ਕੀ, ਪਸ ਏਨ ਕਾ ਓਕ ਹਿਸ਼ਾ ਜੋ ਓਓਸਾਨ ਹੈ ਓਸਕੇ ਓਓਕਾਮ ਕੋ ਮੇਓਏ (ਅ.ਸ.) ਨੇ ਭਯਾਨ ਝਮਾਯਾ.

ਸਵਾਲ 'ਓਓਸਾਨ' ਕੇ ਕ੍ਰਿਯਾ ਕ੍ਰਿਯਾ ਓਓਕਾਮ ਹੈਂ ?

- ੧) ਤਕੈਏਨ੍ਯਾ ੨) ਸੋਓਭਤੇ ਸਾਏਕੀਨ ੩) ਓਜ਼ਲਤੇ ਖਲਕ ੪) ਜ਼ਿਕੇ ਕਸੀਰ ੫) ਤਲਭੇ ਏਏਰੇ ਖੁਏ ੬) ਤਵਕਕਲ ੭) ਹਿਜ਼ਰਤ ੮) ਓਸ਼ਰ ਯਾਨੇ ਅਪਨੀ ਆਮਏਨੀਕਾ ਏਸਵਾਂ ਹਿਸ਼ਾ ਰਾਛੇਖੁਏ ਮੇਂ ਸਝ ਕਰਨਾ ਵਗੈਰਾ.

ਸਵਾਲ ਕ੍ਰਿਯਾ ਓਨ ਓਓਕਾਮਕੋ ਰਸੂਲੁਲਲਾਹ (ਸ.ਅ.) ਨੇ ਭਯਾਨ ਨਹੀਂ ਝਮਾਯਾ ਥਾ ?

- ਆਂਓਜ਼ਰਤ (ਸ.ਅ.) ਨੇ ਓਨ ਓਓਕਾਮ ਕੋ ਭਯਾਨ ਝਮਾਯਾ ਹੈ ਮਗਰ ਓਨ ਓਓਕਾਮ ਕੇ ਝ੝ ਵ ਵੁਜੂਭ ਕੋ ਜ਼ਾਹਿਰ ਨਹੀਂ ਝਮਾਯਾ ਓਰ ਓਨਕੀ ਏਵਤ ਨਹੀਂ ਕੀ.

ਸਵਾਲ ਕ੍ਰਿਯਾ ਯੇ ਓਓਕਾਮ ਕੁਰਆਨੋ ਓਏੀਸ ਮੇਂ ਮੌਜੂਏ ਹੈਂ?

- ਕੁਰਆਨੇ ਸ਼ਰੀਝ ਮੇਂ ਸਾਰੇ ਓਓਕਾਮ ਮੌਜੂਏ ਹੈਂ.

सवाल फिर उलमा ने इन अलकाम को क्यों नहीं बयान किया ?

●●● उलमाने अकयद व हबादत व मुआमेलात में बहुत कुछ कोशिश की है और बहुत सी उल्लानों को दूर किया है, मगर इन अलकाम की तरफ या तो इनको तवज्जो नहीं हुआ या इस वजह से के रसूले जुदा (स.अ.) ने इन की दावत नहीं की है उसकी तफसील नहीं की.

सवाल क्या इन अलकाम में से हर एकमके लिये आयते कुर्आन मौजूद है ?

●●● बेशक मौजूद है. उसको आंछंदा बयान करेंगे.

सवाल क्या मलदी (अ.स.) ने इन अलकाम की दावत की है ?

●●● हां, इन्ही अलकाम की दावत किया है और इनको इर्ज किया है.

सवाल आपका क्या नाम है और आप का क्या लकब है ?

●●● इज्जरत का नाम मुहंमद (अ.स.) है और आपका लकब मलदी (अ.स.) है. यूनांये आंइज्जरत (स.अ.) ने जबर दी है के वह शप्स जो मेरे बाद जलीइतुल्लाह होगा वह मेरा इमनाम है.

सवाल आपके मां-बाप का क्या नाम है ?

●●● उ. मलदी (अ.स.) की मां का नाम आमीना है और बापका नाम सैयद अब्दुल्लाह है और इदीसे सहीह में जिक किया गया है के मलदी (अ.स.) के मां-बाप का यही नाम होगा.

सवाल उ. मलदी (अ.स.) का सिलसिलअे नसब कहां पहुंचता है ?

●●● उ. इमाम हुसैन (रजि.) के पास पहुंचता है.

सवाल उ. मलदी (अ.स.) का सिलसिलअे नसब बयान किया जाये.

●●● સૈયદ મુહમ્મદ મહદી (અ.સ.) ઇબ્ને સૈયદ અબ્દુલ્લાહ બિન સૈયદ ઉસ્માન બિન સૈયદ ખિઝર બિન સૈયદ મૂસા બિન સૈયદ યુસુફ બિન સૈયદ યાહયા બિન સૈયદ જલાલુદ્દીન બિન સૈયદ નેઅમતુલ્લાહ બિન સૈયદ ઇસ્માઇલ બિન સૈયદના ઇમામ મૂસા કાઝિમ (રઝિ.) બિન સૈયદના ઇમામ જાફર સાદિક (રઝિ.) બિન સૈયદના ઇમામ બાકર (રઝિ.) બિન સૈયદના ઇમામ ઝૈનુલઆબિદીન (રઝિ.) બિન સૈયદના મૌલના હઝરત ઇમામ હુસૈન (રઝિ.) બિન સૈયદના મૌલાના ઇમામુના હઝરત અલી ઇબ્ને અબી તાલિબ (રઝિ.)

સવાલ હ. મહદી (અ.સ.) કિસ જગા ઓર કિસ સન મેં પૈદા હુવે?

●●● આપ કે માંબાપ શહર જૌનપૂર મેં રહેતે થે. આપ ઇસી શહર મેં પૈદા હુવે ઓર યે શહર હિંદુસ્તાન કે મશહૂર શહરોં મેં સે હૈ. રોઝ દો શુંબા (સોમવાર) યાને પીર કે રોઝ, ૧૪ માહે જમાદીયુલ્અવ્વલ, ૮૪૭ હિજરી મેં આપકા તવલ્લુદ હુવા 'શમ્સે વિલાયત' આપકી તારીખે વિલાદત હૈ.

સવાલ આપકે કુછ હાલાત બયાન કિજીયે?

●●● આપ જબ પૈદા હુવે આપકે દોનોં હાથ બરહનગી કો ઢાંકે હુવે થે. આપકે મુબારક જિસ્મ પર મકખી નહીં બૈઠતી થી. આપકો સાયા નથા. આપકે રોને કી આવાઝ સુનને વાલોં કે દિલ નર્મ હો જાતેથે. આપકી પૈદાઇશકે વક્ત બુત ગીર ગયે. આપ જબ પૈદા હુવે ગૈબ સે યે આવાઝ સુનાઇદી કે હક ઝાહિર હુવા ઓર બાતિલ મિટ ગયા. ઇસ આવાઝ કો હ. શેખ દાનિયાલ ને જો ઉસ ઝમાને મેં બહુત બળે બુઝુર્ગ થે સુનકર તાજજુબ કિયા. આપને અવ્વલ જો બાત કી થી વો યે થી કે 'મહદી આયા'. જબ આપકી ઉમેશરીફ ઉસ સન કો પહુંચી કી આપ કે

કુછ તાલીમ કી જાયે તો આપકે બાપ હ. સૈયદ અબ્દુલ્લાહ (રઝિ.) ને આપકો શેખદાનિયાલ (રે.અ.) કે મદ્રસે મેં બિઠાયા. બાલિગ હોને કે પહેલે આપ બહુત બળે આલિમ હો ગયે. શેખ કે મદ્રસે મેં બળેબળે ઉલમા આતે થે ઓર આપકી તકરીરસે આજિઝ હોતે થે. અખિરમેં આપકો 'અસદુલ્ઉલમા' કા ખિતાબ દિયા ગયા. (ઉસ વક્ત આપકી ઉમ્મ સિર્ફ ૧૨ સાલ થી) આપકી શોહરા દૂર દૂર કે મુલ્કોં મેં હો ગયા થા કે આપ કમઉમ્મી મેં બહુત બળે આલિમ હુવે. ઇસકે બાદ આપ હંમેશા ખુદા કી યાદમેં રહતે ઓર દુન્યા કે કામકાજ સે આપ બેખબર રેહતે થે. નમાઝ કે વક્તોં મેં આપકો ઇસ આલમકી ખબર હોતી થી ઓર વુઝૂ કરકે નમાઝ અદા ફર્માતે થે. ૧૨ બરસતક આપકી યહી હાલત રહી. ઇસ ઝમાને મેં આપકી ખૂરાક બહુત કમ થી.

સવાલ આપકે ક્યા અખ્લાક થે?

- આપ બહુત હી સચ્ચે, વાદે કે પક્કે, ગરીબોંકે ગમખ્વાર, નાદારોં કે મદદગાર, સખી, જવાંમર્દ, હયાદાર, બળે દાનિશમંદો હોશિયાર, નિહાયત આબિદ, પરહેઝગાર, અમાનતદાર શખ્સ થે, ગરઝ આપકે અખ્લાક વહીથે જો રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે અખ્લાક થે ઓર આપકે સિફાત વહી થે જો રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે સિફાત થે.

સવાલ હઝરત ને અપને મહદીએ મવઊદ હોને કા દાવા કબ ફર્માયા?

- જબ આપકી ઉમ્મ ચાલીસ(૪૦) બરસ કી હુછ આપને ખુદા કે હુકમસે અપને મહદીએ મવઊદ હોને કા દાવા ફર્માયા.

સવાલ આપકો ખુદા કા હુકમ કિસ તરહ હુવા કરતા થા?

- આપકો જિબ્રઇલ (અ.સ.) કે વાસ્તેસે તાલીમ નહીં હોતીથી બલકે આપકો અલ્લાહતઆલા સે બિલાવાસ્તા તાલીમ હોતી

थी. आप जो कुछ इर्माते और काम करते थे, जुदाके लुकमसे इर्माते और करते थे. यूनांये आपसे ये रिवायत मरवी है के मुजको हर रोज अल्लाह तआला से नछ तालीम होती है और मेरे और अल्लाहतआलाके दरम्यान कोछ वास्ता नहीं है.

सवाल आपको किस वजह से बिलावास्ता तालीम होती थी और जिब्रिल(अ.स.) के वास्ते से क्यों नहीं होती थी?

●●● पहले साबित हो यूका है के जिसको जिब्रिल (अ.स.) के वास्ते से तालीम होती है वो नबी होता है और ये बात साबित हो यूकी है के आंउरत (स.अ.) पर नुबूवत जत्म हो यूकी और आप जातिमेनुबूवत हैं पस अगर महदी (अ.स.) को भी जिब्रिल (अ.स.) के वास्ते से तालीम होगी तो आप नबी हो जायेंगे छस सूरत में रसूलुल्लाह (स.अ.) 'जातिमुल्अंबिया' नहीं रेह सकेंगे, डालांके कुरआने शरीफ से आपका जातिमुल् अंबिया होना साबित हो यूका है. गरज उम्मेते रसूलुल्लाह (स.अ.) में किसी शप्स के लिये तालिमे जिब्रिल (अ.स.) काबिले तस्वीम नहीं है. छसीवास्ते महदी (अ.स.) ने ये दावा किया है के अल्लाहतआला मुजे जुद बिलावास्ता तालीम देता है.

सवाल जब उ. महदी (अ.स.) ने अपने महदीअे भवउद होने का दावा इर्माया तो उरत के दावे के क्या अल्लाज थे?

●●● उरत महदी (अ.स.) के दावे के ये अल्लाज थे के 'मुज पर जो शप्स छमान लाया वो मोमीन है और जिसने मेरा छन्कार किया वह काफिर है'

सवाल क्या ये कुड़े शरछ डोगा?

●●● बेशक ये कुछे शरह होगा क्योंकि जलीकतुल्लाह का इन्कार कुछे शरह है.

सवाल ह. मलदी (अ.स.) ने मलदी होने के दावे पर क्या दलील इर्माह है?

●●● दो दलीलें पेश की हैं अक इत्तेबाअे ખુંदा और दूसरी इत्तेबाअे मुहम्मद मुस्तुफा (स.अ.)

सवाल क्या मलदी (अ.स.) ने ये दावा इर्माया है के मैं रसूलुल्लाह (स.अ.) का ताबेअ् हूं और 'मुबय्यने शरीयत' (शरीयत का बयान करनेवाला) हूं?

●●● यही दावा इर्माया के मैं ताबअे मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.) हूं और 'मुबय्यने शरीयत' हूं.

सवाल मलदी (अ.स.) किस थीज में रसूलुल्लाह (स.अ.) के ताबे हैं?

●●● जो शरीयत ખुदाअेतआलाने रसूलुल्लाह (स.अ.) पर उतारी है उसकी आप पैरवी करते थे और इस तरह पैरवी इर्माते थे जिस तरह के ખुद रसूलुल्लाह (स.अ.) इर्माते थे. इसमें बाल बराबर भी इर्क नहीं होताथा. यूनांये रसूलुल्लाह (स.अ.) ने इर्माया है के 'मलदी मेरे कदम बर कदम चलेंगे और बाल बराबर भी जता न करेंगे' याने जो कुछ आं हजरत (स.अ.) ने अमल किया है वही अमल करेंगे पस ह.मलदी (अ.स.)ने वही अमल किया जो आं हजरत (स.अ.) अमल करते थे.

सवाल क्या मलदी (अ.स.) के सिवा कोह दूसरा शप्स भी इस तरह की पैरवी कर सकता है?

●●● रसूलुल्लाह (स.अ.) ने इस पैरवी की जबर पास मलदी (अ.स.) की शानमें इर्माह है और ये जालिर इर्माया है के

महदी (अ.स.) मेरी पैरवी में जाता नहीं करेंगे, परस महदी (अ.स.) इस वजह से के आप मासूम हैं रसूलुल्लाह (स.अ.) की पैरवी में अपना नज़ीर नहीं रखते.

सवाल क्या रसूलुल्लाह (स.अ.) के सहाभा भी ऐसी पैरवी नहीं कर सकते?

●●● नहीं कर सकते क्यों के सहाभाओ रसूलुल्लाह (स.अ.) मासूम नहीं हैं तो मुम्किन है के छन्की पैरवी में जाता हो जाये.

सवाल क्या सहाभाओ रसूलुल्लाह (स.अ.) का मासूम होना साबित नहीं है ?

●●● कोछ शरछ दलील उनके मासूम होने पर मौजूद नहीं है और नीज़ सहाभा (रज़ि.) मुस्तकील साहिबे दावत नहीं है. अगर मुस्तकील साहिबे दावत होते नो छन्का मासूम होना वाज़िब होता क्योंकि मुस्तकील साहिबे दावत की तस्दीक ईर्ज़ होती है और जब वह जाती (जाता करने वाला) होगा तो उसकी तस्दीक ईर्ज़ न होगी.

सवाल क्या रसूलुल्लाह (स.अ.) के सभ सहाभा से महदी (अ.स.) अइज़ल हैं?

●●● बेशक अइज़ल हैं और इसके दो सबब हैं, अक्वल ये के महदी (अ.स.) मासूम हैं और सहाभाओ रसूलुल्लाह (स.अ.) मासूम नहीं हैं. दुव्वम येके महदी (अ.स.) अल्लाह के पलीक़े हैं. पलीक़तुल्लाह, पलीक़ओ रसूलुल्लाह (स.अ.) से अइज़ल है.

सवाल इसके पहले ये बात समज़ाछ गछ है के महदी (अ.स.) को भगैर वास्ते के जुदासे ईज़ मिलता है और रोज़ अल्लाह तआला से नई तालीम होती है तो फिर आप आंछज़रत (स.अ.) की

क्यों पैरवी करते हैं?

- तुम इस बात को ખૂબ समझलो के हर पैगम्बर बावजूद इसके के वो ખુदासे और जिब्रिल (अ.स.) से तालीम पाता है अपने से पहले पैगम्बर का ताबे होता है. यूनांये ह. दाउद (अ.स.) बावजूद इसके के आप साहबे किताब हैं और ખुदा और जिब्रिल (अ.स.) से हैजोतालीम पाते हैं मगर आप ह. मूसा (अ.स.) की शरीअत पर अमल करते थे, और ખुदा से आपको इसी तरह का हुकम था. आंजलरत (स.अ.) बावजूद इसके के आप जातिमे पैगम्बरों हैं और साहिबे कुरआनेमज्द हैं, मगर आपको अल्लाह तआला ने ये हुकम किया था के सब पैगम्बरों की हिदायत की पैरवी करो वो आयते शरीफा ये है...

उलाहकल्लजीन उदल्लाहु इलदाहुमुक्तदीह्

पस आंजलरत (स.अ.) ने इस हुकम से सब पैगम्बरों की पैरवी की. इसी तरह ह. मउदी (अ.स.) ने भी बावजूद इसके के आपको हररोज ખुद अल्लाह तआला से नई तालीम होती थी, अल्लाह तआला के हुकम से आंजलरत (स.अ.) की पैरवी की है और इसी तब्इयते ताम्मा (पूर्णा अनुसरण) की वज्हे से आप रसूलुल्लाह (स.अ.) के बराबर हैं.

सवाल क्या रसूलुल्लाह (स.अ.) की उम्मत में ह. मउदी (अ.स.) के सिवाय किसी दूसरे को बगैर वास्ता तालीमे अहकामे दीनी कुछ है या होगी?

- मउदी (अ.स.) के सिवाय किसीको उम्मते रसूलुल्लाह (स.अ.) में तालीम बिलावास्ता नहीं है क्यों के मउदी (अ.स.) के सिवाय कोह दाह-इल्लाह और ખलीफतुल्लाह नहीं है.

सवाल क्या औलियाअे कामिलीन को भी तालीम बिलावास्ता नहीं है?

●●● ખુદા સે તાલીમે એહકામ ઉસી શખ્સ કો હોતી હૈ જો દાઇ ઇલલ્લાહ હો ઓર જબ આમ ઓલિયાએ કામિલીન સાહબે દાવત નહીં હૈ તો ઇન્કે હક મેં તાલીમ બિલાવાસ્તા કાબિલે તસ્લીમ નહીં હૈ.

સવાલ આપકી તસ્દીક કે બાદ કિતને એહકામ હૈં જિનકો આપને ફર્જ ગર્દાના હૈ?

●●● તર્કે દુન્યા, ઝિકે ખુદા, તલબે દીદારે ખુદા, ઉઝલતે ખલ્ક, તવક્કલ, સોહબતે સાદિકાં, હિજરત.

સવાલ ઇન એહકામ કે સિવા ઓર ભી એહકામ ફર્જ કિયે હૈં?

●●● હાં, ઓર ભી ફરાયઝ હૈં, અપની આમદની કા દસવાં હિસ્સા ખુદાકી રાહ મેં દેના ભી આપને ફર્જ ગર્દાના હૈ ઓર ઇસકે અલાવા ખુદા કી રાહ મેં ખર્ચ કરને કી બળી તાકીદ ફર્માઇ હૈ. દીગર ફરાયઝ કે બયાન કા યે મહલ (જગહ) નહીં હૈ.

સવાલ નમાઝોં મેં ભી મહદી (અ.સ.) ને કોઇ નમાઝ બઢાઇ હૈ? ઓર ઉસકો ફર્જ ફર્માયા હૈ?

●●● હાં, શબેકદ્ર મેં જો રમઝાન કે મહીને કી સતાઇસવીં (૨૭) રાત હૈ, દો રકાતેં ફર્જ કી હૈં, જિસ્કો લૈલ્તુલ્કદ્ર કા દુગાના કેહતે હૈં.

સવાલ તર્કે દુન્યા ઓર ઝિકેખુદા વગૈરા કી ફર્જિયત પર જો દલાઇલ હૈં ઉન્કા બયાન કિયા જાય?

●●● ઇસ બાત કો તુમ બહુત યાદ રખ્ખોકે મહદી (અ.સ.) જબ ખલીફતુલ્લાહ હૈં તો આપ માસૂમ ભી હૈં ઓર આંહઝરત (સ.અ.) ને ભી આપકા માસૂમ હોના બયાન ફર્માયા હૈ ઓર

आप पर धमान लाना ईर्ज़ ठेहराया है, क्योँ के जबतक आपकी छत्तेबा न की जायगी उलाकतो गुमराही दूर नहोगी, जब आपकी ये कैफ़ियत है तो आपका कौलो ईल ખુદ दलील होगी. फिर आपके कौलो ईल पर दूसरी दलीलकी जुड़रत नहीं है. मगर जिन इराधज का उमने जिक़ किया है उनके कतध होने ओर उनके ईर्ज़ होने पर कुरआने मज्जद की आयतें मौजूद हैं.

सवाल तर्क दुन्या पर कौनसी आयत दलील लाध जाती है?

●●● अल्लाहतआला इर्माता है

‘वतभत्तल छलैही तब्तीला’ सू. मुजम्मिल (७३) आ. (८)

‘धमाम राजी’ कहते हैं के ‘तभत्त-ल’ से दुन्याका तर्क करदेना मकसूद है क्योँ के जो शप्स दुन्यामें मशगूल होगा, वो ખुदा में मशगूल नहीं हो सकता.

और नीज अल्लाहतआला इर्माता है

‘मन् का-न युरीदुल्लयातद् दुन्या व जी-न-तहा नुवकिं छलैलिम्
अम्मालहुम् झीहा वहुम् झीहा लायुब्भसून (१५) उलाधकल्लजीन
लै-स लहुम् झीलूआभिरति छल्लन्नार’ (१६)

सू. हूद (११) आ. १५-१६.

याने जो लोग दुन्या को और उसकी आराधश-जीनत को याहते हैं,

उम उनके आमाल पूरे कर देते हैं, उसमें वो तोटे में

(घाटे में, ખसारे में) नहीं रहते,

उनके लिये आभरेत में सिवाये आगके कोध थीज नहीं है.

पस जब दुन्या की ज्वालिश का बदला आगमें जलना है तो इसका छोणना ईर्ज़ कर दिया गया है.

सवाल 'जिके भुदा पर कौनसी आयत दलील लाध जाती है?

- वञ्जुस्लाह क्रियामं व कुठिदं व अला जुनूबिकुम् याने

अस्लाहतआला की याद भणेलुवे, बैठेलुवे, लेटे लुवे उर वकत करो.

इसी आयत से जिके भुदा इर्ज हो गया है.

सवाल 'तलभे दीदारे भुदा' पर कौनसी आयत है?

- 'इमन् का-न यरूजु लिका-अ रब्बिही इत्यअमल् अ-मलन् सालिहं वलायुशरिक् बिधबादति रब्बिही अ-उदा' याने

जो शप्स भुदा को देभना याउता है वो नेक अमल करे.

इस नेक अमल से तर्के दुन्या मुराद है.

सवाल 'उजलते पल्क' से क्या मुराद है? और इसके इर्ज होने पर कौनसी आयत है?

- उजलते पल्क से उन लोगों से जुदा रहना मुराद है जो दिलको अस्लाह की तरफ से दूसरी तरफ फिरा दें और दीन को भेलबाजी समजें. अस्लाहतआला इर्माता है.....

वञ्जुस्ललीनत्तभजु दी-नहुम् लअभं वलइव गर्तहुमुल् उयातिदुन्या सू. (६) आ. (७०)

याने

उन लोगों को छोण दो जिन्होंने अपने दीन को लडोलाभ (भेलबाजी) बना रूपा है उनको दुन्या ने इरेभ (धोका) दिया है.

सवाल 'तवककल' के इर्ज होने में कौनसी आयत है?

- अस्लाहतआला इर्माता है

इ-तवक्कल् अ-लल्लाहि, छन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मु-त-वक्किलीन्
सू. आलेछमान (उ) आ. (१५८)

याने

अल्लाह पर भरोसा करो के अल्लाह तआला अपने पर भरोसा करने
वालों को द्रोस्त रખता है

छस आयत से तवक्कल इर्ज है

सवाल 'सोहबते सादिकां' किस आयत से इर्ज है?

●●● अल्लाहतआला इर्माता है

वकूनु मअस्सादिकीन सू. तौबा (८) आ. (११८)

याने

तुम सख्यों के साथ छोजाव

छस आयत से सोहबते सादिकां इर्ज है.

सवाल छिजरत किस आयत से इर्ज है?

●●● अल्लाहतआला इर्माता है

कालू अलम् तकुनु अर्रुल्लाहि वासि-अतन् इतुछाजिइ इीछा

इ उलाछक मअ्वादुम् जछन्नमु व सा-अत् मसीरा

सू. निसा (४) आ. ८७

याने जो लोग कुर्फार के शहरों से भावजूछ जुअ्फेदीन के नहीं निकले

उनको इश्शते कर्हेंगे क्या अल्लाहतआलाकी जमीन तुम्हारे लिये

(वसीअ नहीं थी, तुम पर वाजिब था के उन शहरों से निकल जाते.

छन लोगों के लिये द्रोछप और भूरी भाजगुश्त है.

सवाल 'उशर' से क्या मुराह है? और किस आयत से इर्ज है?

●●● 'उशर' से माल का छसवां छिस्सा निकालना और उसको राहें

ખુદામેં ખર્ચ કરના મુરાદ હૈ. યે માલ કસબ સે પૈદા ક્રિયા ગયા હો યા મત્રૂકા હો યા કિસીને બખ્શ દિયા હો ઉન સબસે ઉશૂર નિકાલના ફર્ઝ હૈ. ક્યોં કે અલ્લાહતઆલા ફર્માતા હૈ

“વન્ ફિક્કૂ મિમ્મા રઝક નાકુમ્ વમિન્ તયિબાતિ મિમ્મા કસબ્તુમ્”
સૂ. બકરા (૨) આ. (૨૬૭)

ઔર દૂસરી જગા ફર્માતા હૈ.....

“ખુઝ્મિન અમ્વાલહુમ સદકહ્” સૂ. તૌબા (૯) આ. (૧૦૩)

ઇસ જગા સદકે સે ઝકાત મુરાદ નહીં હૈ ક્યોંકે દૂસરી આયતોં મેં ઝકાત કા ફર્ઝ હોના સાબિત હોગયા હૈ. પસ ઇસસે વો સદકા મુરાદ હૈ જો ઝકાત સે જુદા હૈ. ઇમામ મહદી મવઊદ (અ.સ.) ને ફર્માયા કે અપને માલકા દસવાં હિસ્સા સદકા દિયા કરો. યે હુકમ ચૂંકે ‘ખલીફએ ખુદા’ કા હૈ ઔર હમારે ઝમાને તક ઇસકી રિવાયત મુતવાતિર પહુંચી હૈ લિહાઝા ઇસ સદકે સે માલ કા દસવાં હિસ્સાહી મુરાદ હૈ ક્યોં કે ‘મુબય્યને શરીયતે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.)’ યાને ઇમામ મહદી (અ.સ.)ને જો માસૂમ હૈં ઇસકી તખ્સીસ કરદી હૈ ઔર ઇમામે માસૂમ કા કૌલ દલીલો હુજજત હોતા હૈ.

સવાલ ઇસ કિસ્મકા સદકા કિનલોગોં કો દેના ચાહિયે?

- મિસ્કીનોં ઔર મોહતાજોં કો યે સદકા દેના ચાહિયે ચૂનાંચે અલ્લાહતઆલા ફર્માતા હૈ

ઇત્તમલ્ સ-દકાતુ લિલ્ ફુ-કરાઇ, વલ્મસાકી-ન વલ્આમિલી-ન અલૈહા વલ્મુઅલ્લીફતિ કુલૂબુહુમ વ ફીરિકાબ, વલ્ગારમી-ન વફી સબીલિલ્લાહ વખ્નસબીલિ ફરીઝતૂન્ મિનલ્લાહિ વલ્લાહુ અલીમુન્ હકીમ.

સૂ. તૌબા (૯) આ. (૬૦)

सदकत झुकरा और मसाकीन के लिये मुकरर किये गये हैं और उन लोगों के लिये हैं जो के सदकों पर आमिल मुकरर किये जायें और वह लोग भी सदकत के मुस्तहक हैं जिनकी तालीफे कुलूब मंजूर है और गुलामों के आजाद करने और ताव्वान (कर्ज) अदा करने और राहे जुदामें देने और मुसाफर के लिये अल्लाह तआला ने मुकरर किया है.

सवाल 'शबे कद्र' में जो द्दो रकतों इर्ज की नियत बांध कर पण्डा करते हैं ये किस वजहसे इर्ज की गद्य?

- 'लैलतुल्कद्र'की तअय्युन रसूलुल्लाह (स.अ.) ने नहीं इर्मा'थ थी और उसकी तअय्युन में जुद सहाबा अे रसूलुल्लाह (स.अ.) के दरम्यान छप्तेलाफ़ रहा है, यूनांये बाजे सहाबा ये कहते हैं के ये रात बरसमें अेक मर्तबा आती है इसका कोछ महीना मुकरर नहीं है और बाजे कहते हैं के रमजान के आबिरी छिस्से में ये रात है, मगर उसकी तारीफ़ मुकरर नहीं की और बाजों ने बयान किया है के रमजान की तेछसवीं (२३वीं) तारीफ़ यही रात है, और बाजोंने सत्ताछसवीं (२७वीं) रात को मुअय्यन किया है और अकसर उनइया का यही फ़याल है मगर इन सब रिवायतों में से किसी से ये यकीन नहीं है के लैलतुल्कद्र की इलां तारीफ़ मुअय्यन है. जुदासा ये के छस छप्तेलाफ़ की वजह से किसी राये पर यकीन न रहा. अल्लाह तआला ने फ़ास अपने कमाले लुत्फ़ से छस रात का महदी मवजिद (अ.स.) को छल्म बप्श दिया. छ. महदी (अ.स.) ने छस जुजुर्ग रात के जाहिर होने के शुक्र में अल्लाहतआला के लुकमसे द्दो रकतों जमाअत के साथ अदा इर्मा'थ. यूंके जुदके लुकम से आपने ये रकतों अदा की हैं लिहाजा ये रकतों हमारे पास इर्ज हैं.

सवाल क्या धन इराधत का ध-कार कुं है?

●●● हां, बेशक कुं है क्यों के ये अलकाम मुज्बरे सादिक याने मलदी (अ.स.) के इर्मान से इर्त लुवे हैं.

सवाल क्या जिस तरल मलदी (अ.स.) के मलदी डोने का ध-कार कुं है उसी तरल धन अलकाम का ध-कार भी कुं है या कुं इर्क है?

●●● कुं इर्क नहीं है, जिस तरल मलदी (अ.स.) के मलदी डोने का ध-कार कुं है उसी तरल उनके अलकाम का ध-कार भी कुं है.

सवाल मलदी (अ.स.) के मुजालिफ़ के पीछे नमाज पढना जयज है या नहीं?

●●● मुजालिफ़े मलदी (अ.स.) के पीछे कोध नमाज जयज नहीं है.

सवाल नमाज के बाद हाथ उठाकर दुआ मांगना दुरस्त है या नहीं?

●●● सही लदीससे साबित नहीं लुवा है के रसूलुल्लाह (स.अ.) ने नमाज के बाद हाथ उठाकर दुआ मांगी है, पस नमाज के बाद हाथ उठाकर दुआ न मांगनी याहिये, बलके सिजदे में आहिस्ता दुआ करनी याहिये.

सवाल अगर मलदी (अ.स.) की तइसीर और अधम्माअे मुजतेलदीन की तइसीरमें धप्तेलाइ डो तो किस लुकम पर अमल करना याहिये?

●●● मलदी (अ.स.) जलीइतुल्लाह और मुज्बरे सादिक हैं और जतासे मासूम हैं. आपके लुकम पर अमल करना इर्त है, मुजतेलदीन के लुकम को छोड देना याहिये. क्योंके मुजतेलदीन जतासे मासूम नहीं हैं.

सवाल मलदी (अ.स.) को 'नासिरे दीन' केडना याहिये या 'जलीइतुल्लाह' केडना याहिये.

●●● 'નાસિરેદીન' વો શખ્સ હૈ જો દીન કી મદદ કરે, હર આલિમ ઓર નમાઝ રોઝોં કે એહકામ કો સિખાનેવાલાભી નાસિરે દીન હો સક્તા હૈ, પસ આપ કો ખલીફતુલ્લાહ, ખાતિમે દીન, દાઇ-ઇલલ્લાહ, તાબએતામે રસૂલુલ્લાહ કેહના ચાહિયે.

સવાલ ક્યા હઝરત મહદી (અ.સ.) કો નબી વ રસૂલે મુશરેઅ કેહ સકતે હૈં?

●●● નહીં કેહ સકતે, ક્યોં કે કુર્આને મજીદ મેં સાબિત હો ગયાહૈ કે મુહંમદ રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) પર નુબૂવ્વત ખત્મ હો ચૂકી ઓર આંહઝરત (સ.અ.) ને ભી ફર્માયા હૈ કે મેરે બાદ કોઇ નબી 'સાહબે શરઅ' ન હોગા, પસ આપકો નબી એ મુશરેઅ કેહના દુરસ્ત નહીં હૈ.

સવાલ અગર કિસીને આપકો નબીએ મુશરેઅ કહા તો ઉસ પર ક્યા હુકમ હૈ?

●●● ચૂંકે આયતે કુર્આને મજીદ કા મુન્કિર હૈ પસ વો કાફિર હૈ.

સવાલ જબ મહદી ખલીફતુલ્લાહ, દાઇ-ઇલલ્લાહ હૈં તો ક્યા રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે બરાબર હૈં ઓર હમ રૂત્બા હૈં ?

●●● હર પૈગમ્બર અલ્લાહ કા ખલીફા હૈ ઓર દાઇ-ઇલ્લાહ યાને અલ્લાહતઆલા કી તરફ બુલાતા હૈ, પસ ખલીફએ ખુદા ઓર દાઇ-ઇલલ્લાહ હોને સે કોઇ પૈગમ્બર રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે હમરૂત્બા નહીં હો સક્તા, બલકે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) સબ પૈગમ્બરોં સે બુઝુર્ગ હૈં.

સવાલ મહદી કિસ વજહ સે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે હમરૂત્બા હૈં?

●●● મહદી (અ.સ.) ઇસ વજહ સે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે હમરૂત્બા હૈં કે આપ રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે તાબએ તામ હૈં. યાને

જો 'કૌલો ફૈલો હાલ' રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કા થા વહી 'કૌલો ફૈલો હાલ' મહદી (અ.સ.) કા થા ઓર ઇસમેં સરેમૂં (બાલ બરાબર) ખતા નહીં થી. પસ ચૂંકે આપ રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે તાબએતામ હૈં, રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કે હમરૂત્બા વ બરાબર હૈં. પસ જિસ્ને ઇન દોનોં મેં ફર્ક ક્રિયા વો કાફિર હૈ.

સવાલ ક્યા હમારે બુઝુર્ગાને કદીમ કા યહી એઅતકાદ હૈ?

●●● સહાબા એ મહદી (અ.સ.) ઓર તાબઇન કે ઝમાને સે યહી એઅતકાદ હૈ.

સવાલ જિસ્ને યે એઅતકાદ નહીં રખ્યા બલકે રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) કો અફઝલ કહા ઓર મહદી મવઊદ (અ.સ.) કો કમતર કહા તો વહ કાફિર હો જાયેગા?

●●● જિસ્ને રસૂલુલ્લાહ (સ.અ.) ઓર મહદી (અ.સ.) કો બરાબર નહીં કહા વો બેશક કાફિર હૈ.

સવાલ ઇમાન કી હમારે મઝહબ મેં ક્યા તારીફ હૈ?

●●● 'અશહદુ અલ્લાઇલાહ ઇલ્લાલ્લાહુ વઅશહદુ અન્ન મુહમ્મદન્ અબ્દુલ્લુ વરસૂલુલ્લુ' કેહના ઓર જિન ચીઝોં કો આં હઝરત (સ.અ.) ને 'ઝુર્રિયાતે દીન' મેં શુમાર ક્રિયા હૈ ઉનકે હક હોને કા એઅતકાદ રખના ઓર ઇસ બાત કી તસ્દીક કરના કે ઇમામ મહદી (અ.સ.) પૈદા હુવે ઓર મહદીયત કા દાવા ક્રિયા ઓર રેહલત કી. પસ હમારે પાસ મોમીન વહી શખ્સ હૈ જો ઇન સબ ઉમૂર પર ઇમાન લાયા હો.

સવાલ એઅતકાદ હર ઝમાને મેં મુકર્રર હો સકતા હૈ યા ઉસકે લિયે કોઇ ખાસ ઝમાના હૈ ?

●●● એઅતકાદ ઝમાન એ સહાબા વ તાબઇન મેં મુરત્તબ હો સકતા હૈ.

सवाल किन चीजों से अज्ञातकाद बन सकता है?

- कुरआन से, हदीसे मुतवातर से, रिवायते महदी से जो के मुतवातर हो. बाजों ने बयान किया है के इजमाअे सहाबा व ताबहन से भी अज्ञातकाद बन सकता है. इन उमूर की तफसील तुमको बणी किताबों में नजर आयेगी.

सवाल हमारे मजहब में 'सहाबी' की क्या तारीफ है?

- सहाबी वो है जिसने ह. महदी (अ.स.) से तर्क दुन्या के साथ बैअत की हो और आपकी सोहबत में रहा हो और जिसने बगैर तर्क दुन्या हजरत की तस्दीको बैअत की हो, वह सहाबी नहीं है.

सवाल हजरत हमाम (अ.स.) की 'तस्दीको तर्क दुन्या' के बाद अगर किसीने हमाम (अ.स.) के साथ डिजमत नहीं की है, वो सहाबी है या नहीं है ?

- सहाबी तो है मगर वो तारिके इर्जे डिजमत है. हां अगर महदी (अ.स.) ने खुद उसको वतन में रहने की इजाजत दी है तो वो इससे मुस्तशना है.

सवाल ह. हमाम (अ.स.) ने अपने सहाबा में किसीको जमत में दाखिल होने की पुशखबरी दी है या नहीं?

- बारा (१२) सहाबीयों को जमतकी पुशखबरी दी है और वो ये हैं.

- १) बंदगी मियां सैयद महमूद सानीअे महदी (रजि.)
- २) बंदगी मियां सैयद खूंदमीर सिदिके विलायत (रजि.)
- ३) बंदगी मियां शाहे नेअमत (रजि.)
- ४) बंदगी मियां शाहे निजाम (रजि.)

- ૫) બંદગી મિયાં શાહે દિલાવર (રજિ.)
- ૬) બંદગી મલિક બુરહાનુદ્દીન (રજિ.)
- ૭) બંદગી મલિક ગૌહર (રજિ.)
- ૮) બંદગી મલિક મારૂફ (રજિ.)
- ૯) બંદગી મિયાં અમીન મુહમ્મદ (રજિ.)
- ૧૦) બંદગી મિયાં યુસુફ (રજિ.)
- ૧૧) બંદગી મલિક અબ્દુલ મજીદ નૂર નોશ (રજિ.)
- ૧૨) બંદગી મિયાં મલિકજી (રજિ.)

સવાલ ઇન સહાબા મેં કિતને સહાબા, સબ સહાબા સે અફઝલ હૈં?

●●● પાંચ (૫) હૈં

- ૧) બં. મિયાં સૈયદ મહમૂદ સાનીએ મહદી (રજિ.)
- ૨) બં. મિયાં સૈયદ ખૂંદમીર (રજિ.)
- ૩) બં. મિયાં શાહે નેઅમત (રજિ.)
- ૪) બં. મિયાં શાહે નિઝામ (રજિ.)
- ૫) બં. મિયાં શાહે દિલાવર (રજિ.)

સવાલ ઇન પાંચ સહાબીયોં મેં કૌન અફઝલ હૈં?

●●● દો (૨) સહાબી અફઝલ હૈં.

- ૧) બં. મિયાં સૈયદ મહમૂદ સાનીએ મહદી (રજિ.)
- ૨) બં. મિયાં સૈયદ ખૂંદમીર (રજિ.)

સવાલ ઇન દોનો મેં કૌન અફઝલ હૈં?

●●● ઇમામ (અ.સ.) કી સહી રિવાયતોં સે સાબિત હુવા હૈ કે દોનોં સહાબી એક મર્તબે કે હૈં ઓર બં. મલિક ઇલાહદાદ (રજિ.)ને જો તબકએ તાબઇન મેં મશહૂર હૈં, યહી ફૈસલા ફર્માયા હૈ કે હ. બં. મિયાં સૈયદ મહમૂદ સાનીએ મહદી (રજિ.) ઓર હ.

બં. મિયાં સૈયદ ખૂંદમીર (રજિ.) બરાબર હૈં, ઓર યે ફૈસલા હમારી કૌમ મેં મશહૂર હૈ. ઇન દોનોં મેં કમી ઓર બેસી કા એઅતકાદ ન રખના ચાહિયે.

સવાલ ઇમામ (અ.સ.) કી કિત્ની બીબીયાં થીં?

●●● ચાર (૪) બીબીયાં થી

- ૧) બીબી ઇલાહદતી (રજિ.) ૨) બીબી બૂન્જી (રજિ.)
૩) બીબી મલ્કાન (રજિ.) ૪) બીબી ભીકા (રજિ.)

સવાલ ઇમામ (અ.સ.) કો કિત્ને ફરજંદ થે?

●●● પાંચ ફરજંદ થે.

- ૧) બં. મિયાં સૈયદ મહમૂદ સાનીએ મહદી (રજિ.)
૨) બં. સૈયદ અજમલ (રજિ.) (જો બચપનમેં ગુઝર ગયે થે)
૩) બં. સૈયદ અલી (રજિ.) (યેશહીદ હો ગયે)
૪) બં. સૈયદ હમીદ (રજિ.)
૫) બં. સૈયદ ઇબ્રાહીમ (રજિ.)

સવાલ ઇમામ (અ.સ.) કો કિત્ની સાહબઝાદિયાં થીં?

●●● ત્રીન સાહબઝાદિયાં હૈં.

- ૧) બીબી ફાતિમા (રજિ.) ૨) બીબી અખૂંદા બુળન્જી (રજિ.)
૩) બીબી હિદાયતુલ્લાહ (રજિ.)

સવાલ બં. મિયાં સૈયદ મહમૂદ સાનીએ મહદી (રજિ.) કી માં કા નામ કયા હૈ?

●●● બીબી ઇલાહદતી (રજિ.) હૈં. બં. મિયા સૈયદ અજમલ (રજિ.) કી માં ભી બીબી ઇલાહદતી હૈં ઓર મહદી (અ.સ.) કી દો સાહબઝાદિયાં, બીબી અખૂંદા બુળન્જી (રજિ.) ઓર બીબી ફાતિમા (રજિ.) ભી બીબી ઇલાહદતી કે બતન સે હૈં.

सवाल बंदगी सैयद छब्राहीम (रजि.) की मांका क्या नाम है ?

●●● बीबी बून्ज (रजि.) है.

सवाल बंदगी सैयद उमीद (रजि.) की मां का क्या नाम है ?

●●● बीबी तानमती है.

सवाल उजरत मडदी (अ.स.) का दावा कितने बरस रहा ?

●●● बराबर तेघस (२३) बरस रहा.

सवाल उजरत मडदी (अ.स.) का किस तारीख और किस रोज छन्तेकाल हुवा ?

●●● रोज दो शुंभा (सोमवार), तारीख १८, ज़ीकादा, ८१० हिजरी में विसाल हुवा.

सवाल रोजा मुबारक किस शहर में है ?

●●● शहर इराह (अफ़घानिस्तान) में ओक आलीशान गुंबद है और पुरासान में मशहूर है.

सवाल बंदगी मियां सैयद मडमूद (रजि.) को सानीअे मडदी कडेने का क्या सबब है?

●●● जब बंदगी मियां सैयद मडमूद (रजि.) उजरत मडदी (अ.स.) को कब्र में रख कर बाहिर तशरीफ़ लाये आप की शकलो सूरत मडदी (अ.स.) की हो गध. जो सहाबा मौजूद थे उन्हों ने देखकर कहा के आपकी जात सानीअे मडदी है .

सवाल उजरत मडदी मवउद (अ.स.) ने उन मसलों में जो छबादात व मुआमलात व अकाधद से तआल्लुक रखते हैं और उनमें छमाम आजम अबू उनीफ़ा (रे.अ.) और उ. छमामे शाफ़थ (रे.अ.) और छमाम मालिक (रे.अ.) और छमाम ओउमद बिन उंबल (रे.अ.) ने छप्तेलाफ़ इर्माया है, कुछ़ इैसला इर्माया है या नहीं?

●●● જો મઝહબી કિતાબે ઇસ વકત હમારી કૌમમે મૌજૂદ હૈં, ઉનમે અકાયદો ઇબાદાતો મુઆમલાત કી તફ્સીલ નહીં હૈ, મગર એક રિવાયત કૌમ મેં મશહૂર હૈ ઓર વો યે હૈ કે સબ શરઘ મસ્અલોં મેં ઇન ઇમામોં ને જિન કા ઝિક ઉપર હુવા હૈ ખૂબ મૂશગાફી કી હૈ યાને ઉનકો બહુત સાફ સાફ બયાન કિયા હૈ ઓર ઉનકે સબ પહેલુઓં પર નઝર ડાલી હૈ, ઉનમે ગૌર કર કે ઉન મસ્અલોં પર અમલ કરો જિનમે આલીયત હૈ ઓર ઉન મસ્અલોં કો છોળ દો જિનમે રૂપ્સત હૈ. પસ ઇસ ફૈસલે કો પેશે નઝર રખ લિયા જાયે ઓર ઇસકે મવાફિક અમલ કરેં. હાં જિન મસ્અલોં કો ખુદ ઇમામ (અ.સ.) ને બયાન ફર્માયા હૈ ઓર ઇમામોં કી રાએ ઉસકે ખિલાફ હૈ તો ઇમામ (અ.સ.) કે ફર્માન પર અમલ કરના ફર્જ હૈ ક્યોંકે ઇમામ (અ.સ.) માસૂમ હૈં ઓર અલ્લાહ કે ખલીફા હૈં ઓર હઝરાત અઇમ્માએ મુજતેહદીન માસૂમ નહીં હૈં. પસ ગૌર માસૂમ કે હુકમ કો માસૂમ કે હુકમ કે મુકાબલે મેં છોળ દેના ચાહિયે.

સવાલ અગર કોઇ હદીસ ઇમામ મહદી (અ.સ.) કે કૌલ કે ખિલાફ હો તો ક્યા ઉસકો ભી છોળ દેના ચાહિયે ?

●●● બેશક, અગર ખબરે વાહિદ હોતો ઉસકો છોળ દેના ચાહિયે.

સવાલ ખબરે વાહિદ કી ક્યા તારીફ હૈ ?

●●● ખબરે વાહિદ લુગત મેં વો હદીસ હૈ જિસકી રિવાયત એક શખ્સ ને કી હો ઓર ઇસ્તેલાહે શરખૂ મેં ખબરે વાહિદ વો હૈ જિસમેં મુતવાતર કી શરતેં નહોં. એસી હદીસ કે માના યકીની નહીં હોતે ઓર ઇમામ (અ.સ.) કા જો કૌલો ફૈલ હૈ વહ યકીની હૈ. પસ કૌલો ફૈલે ઇમામ (અ.સ.) ઇપ્તેયાર કિયા જાયે ઓર ખબરે વાહિદ છોળ દી જાયે. ઓર હદીસે મશહૂર કી હાલત ભી યહી હૈ, ક્યોં કે વો ભી ખબરે વાહિદ હૈ મગર તાબઇન સહાબા મેં વો મશહૂર હો ગઇ હૈ.

સવાલ હદીસે મુતવાતર કી કયા તારીફ હૈ ?

- હદીસે મુતવાતર વો હૈ જિસકી રિવાયત બળી જમાઅત ને કી હો ઓર હર તબકે મેં બળી જમાઅત હો. યે જમાઅત ઐસી હો કે ઉનકા ઝૂઠી બાત પર ઇકફા હોના મુહાલ હો, ઇસસે ઇલ્મે યકીની હોતા હૈ.

સવાલ મહદી (અ.સ.) કી રિવાયત કી સહત કા કયા તરીકા હૈ ?

- હઝરત બંદગી મિયાં સૈયદ ખૂંદમીર સિદિકે વિલાયત (રઝિ.) ને 'અકીદે શરીફ' મેં લિખા હૈ કે ઇમામ (અ.સ.) ને ફર્માયા હૈ કે મેરી રિવાયત કો કુર્આને મજીદ સે મુતાબિકત કરો ઓર દેખો અગર મુતાબિકત હો જાયે તો વહ રિવાયત મુઝસે હૈ ઓર અગર ના મુતાબિકત હો તો વહ રિવાયત મુઝસે નહીં કી ગઇ હૈ. ગરઝ રિવાયતે મહદી (અ.સ.) કી સહત ઇસ તરહ હોગી.

સવાલ હદીસે મુતવાતર કે મુન્કિર કા કયા હુકમ હૈ ?

- હદીસે મુતવાતર ઓર રિવાયતે ઇમામ (અ.સ.) કા જો મુતવાતર હો મુન્કિર કાફિર હૈ. વલ્લાહુ અલીમ.

યે મુખ્તસર મસાઇલ બચ્ચોં કે લિયે મુફીદ હૈ

ઓર

ઇનકી તફ્સીલો શરહ મૈને અપને તવીલ રિસાલોં મેં કી હૈ
અલ્લાહ તઆલા કા શુક્ર હૈ કે યે રિસાલા બંદએ ખાકસાર સે પૂરા કરા દિયા

ફકત

સૈયદ અશરફ 'શમ્સી' યદુલ્લાહી

બિન

સૈયદ અલી બિન હાફિઝુલ્અકમલ વલ્ફાઝિલુલ્ અફઝલ જદી વ મૌલાઇ
સૈયદ અશરફ આલિમ અચ્છામિયાં સાહબ (મદફૂન ધોલકા)

શુકો - એહસાન

અલ્લાહતઆલા કા લાખલાખ શુક હૈ કે દેઢસાલ કે મુખ્તસર અર્સે મેં કૌમ કે નૌજવાનોં
ઔર બચ્ચોં કે લિયે યે તીસરી કિતાબ કી ઇશાઅત્ કા કામ અલ્લાહતઆલાને અપને ઇસ
નાચીઝ બંદે સે લિયા. ઇસકે પહેલે 'ઝિકુલ્લાહ કુર્આન કી રૌશની મેં' જનવરી '૯૬ મેં ઔર
'હમારી નમાઝ ઔર હમારી દુઆ' ફરવરી '૯૭ મેં શાયે હો ચૂકી હૈ ઔર અબ મઈ '૯૭ મેં
કિતાબ 'અલ્ અકાઈદ' કે દોનોં હિસ્સે આપકે હાથ મેં હૈં.

નમાઝ, રોઝા ઔર શરીયત કે દૂસરે ઝુરૂરી અરકાન કી તાલીમ કે બાદ, સબસે અહમ
ચીઝ જિસકો મઝબૂતો મુસ્તહકમ કરને કી ઝુરૂરત હૈ વો 'અકીદા' હૈ. અકીદા પુખ્તા હોગા
તો ઇમાન ભી મુસ્તહકમ હોગા.

'અલઅકાઈદ' ઇસી સિલસિલે કી એક કળી હૈ, જિસે અલ્લામા સૈયદ અશરફ 'શમ્સી'
સાહબ યદુલ્લાહી (રે.અ.) ને ઇ.સ. ૧૯૧૩ મેં (હિ. ૧૩૩૨), સુલ્તાનુલ વાએઝીન, મૌલાના
સૈયદ મુર્તુઝા સાહબ 'યદુલ્લાહી' કી ફર્માઈશ પર કમસિન બચ્ચોં કી દીની તાલીમ કે લિયે
લિખા થા. ઇસકા હિંદી ઔર અંગ્રેજી તર્જુમા 'મર્કઝી અંજુમને મહદવિયા' હૈદરાબાદ કી તરફ સે
શાયે હો ચૂકા હૈ.

ઇસ કિતાબ કો પઢને સે ઐસા મહેસૂસ હોતા હૈ કે જૈસે હમ કિસી બળે આલિમો
ફાઝિલ હઝરત કી મહેફિલ મેં, ઉનકી સોહબત મેં, ઉનકે સામને બેઠે હુવે હૈં ઔર ઉનસે તરહ
તરહ કે સવાલ કર રહે હૈં ઔર વહ જવાબ દે રહે હૈં. લિહાઝા ઇસ કિતાબ કે મુતાલેએ સે
અલ્લાહતઆલા કે ઉસ હુકમ કી ભી પાબંદી હો જાતી હૈ, જસે અલ્લાહતઆલા ને કુર્આને મજીદ મેં
યું ઇર્શાદ ફર્માયા હૈ કે

वस्अलु अडलिज़् जिक्रि ई-कुन्तुम् लातअलमून.

अगर तुम नहीं जानते हो तो 'अडलेज़िक्' से (जाननेवालों से) पूछ लिया करो.

મુઝે ઉમ્મીદ હૈ કે યે કિતાબ ઐસે લોગોં કો જો અપની દીની માલુમાત બઢાના યાહતે
હૈં ઔર સહી ઇસ્લામી ઔર મહદવિયા અકાઈદ કો જાનના યાહતે હૈં ઝુરૂર ફાયદે મંદ સાબિત
હોગી.

આખિર મેં મેં ઉન સબ લોગોં કા શુક્રિયા અદા કરતા હું, જિન્હોંને ઇસ કિતાબ કી
ઇશાઅત મેં મેરી મદદ કી. ખુસુસન મેરે વાલિદે બુઝુર્ગવાર પીરો મુર્શિદ હઝરત સૈયદ
રૌશનમિયાં સાહબ કા જિનકે ઝેરે નિગરાની ઇસ કિતાબ કા ગુજરાતી લિપી મેં અનુવાદ હુવા
ઔર સૈયદ મુસ્તુફા મુબારક યદુલ્લાહી ફરઝંદે હઝરત સૈયદ કાસિમમિયાં સાહબ (એહલે
બળોદા) કા જિન્હોંને રાતોં કો જાગ કર ઇસ કિતાબ કી 'કોમ્પ્યુટર કોપી' નિકલવાને મેં મેરી
મદદ કી, ઔર સૈયદ અલી 'નદીમ' યદુલ્લાહી કા ભી શુક્રગુઝાર હું જિન્હોંને ઇસ કિતાબ કે
પહેલે હિસ્સે કા 'ફાઇનલ પ્રુફ રીડીંગ કિયા ઔર ખુસુસી તૌર પર ધી યદુલ્લાહી ટ્રસ્ટ,
હૈદરાબાદ કે કારફર્માઓં કા ભી શુક્રગુઝાર હું જિન્હોંને ઇસ કિતાબ કી ઇશાઅત મેં અહમ
હિસ્સા લિયા ઔર ઇસ કિતાબ કે દોનોં હિસ્સોં કે 'ટાઇટલ ક્વર' કે અખરાજાત બદાઈશત કિયે.
અલ્લાહતઆલા સે દુઆ હૈ કે વો ઇસ ટ્રસ્ટ કો તરક્કી ઔર કામિયાબી અતા ફર્માએ તાકે
ઉન્હોંને કૌમે મહદવિયાકી ખિદમત કા જો બેળા ઉઠાયા હૈ વો બખૂબી અંજામ પાતા રહે.

ડૉ. સૈયદ અશરફ "યદુલ્લાહી" બિન હઝરત સૈયદ રૌશન મિયાં "યદુલ્લાહી"

તા. ૨૨-૫-૧૯૯૭